दृश्य कला तत्वों का व्यावहारिक अनुप्रयोग

सुश्री जुलेशा सिद्धार्थ वानखेड़े
एम.ए. मास कम्युसनकेशन

सार (Abstract)

दृश्य कला तत्व बहुमुखी हैं और इन्हें कलात्मक या डिज़ाइन इरादों को व्यक्त करने के लिए अनगिनत तरीकों से जोड़ा और हेरफेर किया जा सकता है। कलाकार इन तत्वों का उपयोग रचनात्मकता को व्यक्त करने, कहानियां बताने, भावनाओं को जगाने और पेंटिंग और मूर्तिकला से लेकर ग्राफिक डिजाइन, फैशन और वास्तुकला तक विभिन्न कला रूपों में विचारों को संप्रेषित करने के लिए करते हैं। दृश्य कला तत्व, जैसे रेखा, आकार, रंग, बनावट और रूप, मूलभूत घटक हैं जिनका उपयोग कलाकार कला के सम्मोहक और सार्थक कार्यों को बनाने के लिए करते हैं। इन तत्वों को विभिन्न कला रूपों और संदर्भों में विभिन्न व्यावहारिक तरीकों से लागू किया जा सकता है।

सूचक शब्द (Key Word)

रेखा, आकार, रूप, स्थान, बनावट, मूल्य और रंग

प्रस्तावना (Introduction)

रेखा, आकार, रूप, स्थान, बनावट, मूल्य और रंग - वे मूलभूत घटक हैं जिनका उपयोग कलाकार दृश्य रचनाओं को बनाने और उनमें हेरफेर करने के लिए करते हैं। **रेखा** उसे संदर्भित करती है जिससे दो बिंदु आपस में जुडे होते है फिर वह क्षैतिज रेखाए हों, विकर्ण या उध्र्वाधर हो। रेखा ऐसे चिह्न या स्ट्रोक हैं जिनकी लंबाई और दिशा होती है। उनका उपयोग किनारों को परिभाषित करने, पैटर्न बनाने और गति या संरचना को व्यक्त करने के लिए किया जा सकता है। विभिन्न प्रकार की रेखाएँ, जैसे सीधी, घुमावदार या टेढ़ी-मेढ़ी, विभिन्न भावनाएँ और दृश्य प्रभाव उत्पन्न कर सकती हैं। **आकार** आकृतियाँ परिभाषित सीमाओं के साथ द्वि-आयामी संलग्न क्षेत्र हैं। वे ज्यामितीय (जैसे, वर्ग, वृत्त) या जैविक (अनियमित आकार) हो सकते हैं। **रूप** किसी वस्तु या विषय के त्रि-आयामी पहलू को संदर्भित करता है। इसमें किसी आकृति की गहराई, आयतन और संरचना शामिल होती है। कलाकार 2डी कला में त्रि-आयामीता का भ्रम देने के लिए छायांकन और परिप्रेक्ष्य का उपयोग करते हैं। **स्थान** कला में स्थान किसी रचना में वस्तुओं के भीतर और आसपास के क्षेत्र को संदर्भित करता है। यह सकारात्मक (वस्तुओं द्वारा व्याप्त) या नकारात्मक (खाली स्थान) हो सकता है। स्थान और स्थानिक संबंधों का उपयोग रचना के संतुलन और गहराई को प्रभावित करता है। **बनावट** किसी सतह की स्पर्श गुणवत्ता या दृश्य उपस्थिति है। कलाकार 2डी कला में हैचिंग, स्टिपलिंग या लेयरिंग जैसी तकनीकों के माध्यम से बनावट का भ्रम पैदा करते हैं। 3डी कला और डिज़ाइन में, वास्तविक बनावट को महसूस और देखा जा सकता है, जैसे किसी मूर्ति का खुरदरापन या सिरेमिक सतह की चिकनाई। **मूल्य** रचना में रंग या ग्रेस्केल का हल्कापन या अंधेरा है। यह कंट्रास्ट बनाने, रूप को परिभाषित करने और किसी कृति की मनोदशा और गहराई को स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण है। मात्रा की भावना पैदा करने के लिए मूल्यों के एक ग्रेडिएंट का उपयोग किया जा सकता है। **रंग** रचना की एक मनोदशा है। कलाकार वास्तु को चित्रित करने और उसे वर्णित करने के लिए उसका उपयोग करते। रंग प्रकाश

की विभिन्न तरंग दैर्ध्य द्वारा निर्मित दृश्य धारणा है। यह भावनाएं जगा सकता है, मूड बना सकता है और अर्थ बता सकता है। रंग सिद्धांत रंगों के बीच संबंधों का पता लगाता है, जिसमें पूरक, अनुरूप और त्रियादिक योजनाएं शामिल हैं।

दृश्य कला तत्वों के व्यावहारिक अनुप्रयोग

ग्राफ़िक डिज़ाइन:

रेखा: रेखाओं का उपयोग ग्राफ़िक डिज़ाइन में संरचना और पदानुक्रम बनाने, दर्शकों की नज़र का मार्गदर्शन करने और सामग्री को अलग करने के लिए किया जा सकता है।

आकार: आकार लोगो डिजाइन में मौलिक हैं, जो यादगार और पहचानने योग्य प्रतीक या आइकन बनाते हैं।

रंग: ग्राफ़िक डिज़ाइन में रंग विकल्प किसी डिज़ाइन के मूड, पठनीयता और ब्रांडिंग को प्रभावित करते हैं।

बनावट: बनावट डिजिटल या प्रिंट डिज़ाइन में गहराई और स्पर्शनीय गुण जोड़ सकती है, जिससे उनकी दृश्य अपील बढ़ जाती है।

फोटोग्राफी:

रेखा: प्रमुख रेखाएं तस्वीर के माध्यम से दर्शक की आंख का मार्गदर्शन करती हैं, जिससे गति या दिशा का बोध होता है।

आकार: दिलचस्प आकृतियों और नकारात्मक स्थान के साथ तस्वीरें बनाने से उन्हें और अधिक आकर्षक बनाया जा सकता है।

रंग: रंगीन फोटोग्राफी दृश्य प्रभाव पैदा करने और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए रंग सिद्धांत के उपयोग पर निर्भर करती है।

बनावट: फोटोग्राफी में विषयों या सतहों के स्पर्श गुणों को व्यक्त करने के लिए बनावट महत्वपूर्ण है।

वास्तुकला:

रेखा: वास्तुशिल्प रेखाएं और रूप किसी इमारत की दृश्य पहचान और कार्यक्षमता बनाते हैं।

आकार: भवन के आकार और लेआउट किसी संरचना के समग्र सौंदर्यशास्त्र और कार्यक्षमता को प्रभावित करते हैं।

रंग: इमारतों के बाहरी और आंतरिक भाग पर रंगों का चयन उनके दृश्य प्रभाव और उद्देश्य को प्रभावित करता है।

बनावट: वास्तुशिल्प सामग्री और बनावट इमारतों को स्पर्शनीय और दृश्य चरित्र प्रदान करती हैं।

उपयोगकर्ता अनुभव (यूएक्स) डिज़ाइन और उपयोगकर्ता इंटरफ़ेस (यूआई):

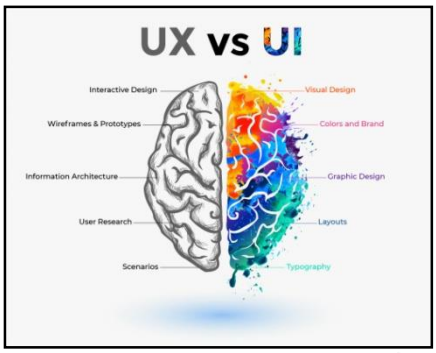

लाइन: लाइनों और ग्रिड का उपयोग डिजिटल इंटरफेस में तत्वों को संरचना और संरेखित करने, स्थिरता और प्रयोज्य सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है।

आकार: आकार और चिह्न इंटरफ़ेस के माध्यम से जानकारी देते हैं और उपयोगकर्ताओं का मार्गदर्शन करते हैं।

रंग: रंग की पसंद किसी ऐप या वेबसाइट के भीतर उपयोगकर्ता की धारणा, भावनाओं और नेविगेशन को प्रभावित करती है।

बनावट: स्पर्शनीय अनुभव पैदा करने या तत्वों की दृश्य अपील को बढ़ाने के लिए बनावट को डिजिटल रूप से अनुकरण किया जा सकता है।

चित्रकला:

रूपभेदः प्रमाणानि भावलावण्ययोजनम।

सादृश्यं वर्णिकाभंग इति चित्रं षडंगकम्।।

यह श्लोक भारतीय कला के छह अंगों की गणना करता है- रूप-भेद (रूप का रहस्य), प्रमाणनी (अनुपात), भाव (भावनात्मक स्वभाव), लावण्य-योजनम (रचना में सुंदरता), सदृष्यम (('समानता') और वर्णिका-भंग (रंग भेद)।

षडंग भारतीय चित्रकला का एक अनिवार्य हिस्सा है। प्राचीन गुफा चित्रों से लेकर तो आजतक हम जितने भी कला कृतीयों को देखते है तो हमे ज्ञात होता है कि ये सभी कला कृतीया रूप-भेद, प्रमाण, भाव, लावण्य-योजनम, सदृष्यम और वर्णिका-भंग इस छह अंगों से समाहित है। वात्स्यायन रचित 'कामसूत्र' में वर्णित इस श्लोक में आलेख्य यानि चित्रकर्म के छह अंग, रूपभेद, प्रमाण, भाव, लावण्ययोजना, सादृश्य और वर्णिकाभंग को बताया गया है। प्राचीन भारतीय चित्रकला में यह षडंग हमेशा ही महत्वपूर्ण और सर्वमान्य रहे है। आधुनिक चित्रकला पर पाश्चात्य का प्रभाव कितना ही क्योंना पड़ा हो फिर भी वह महत्वहीन नहीं हो सका। क्योंकि षडंग वास्तव में चित्र के सौन्दर्य का शाश्वत आधार है।

षडंग के अंतर्गत आनेवाले सभी अंगों का वर्णन निम्नलिखित हैं।

रूपभेद :

किसी काम या बात के रूप में किया हुआ आंशिक परिवर्तन। वह गुण जिसके कारण किसी आकृति में सौंदर्य अभिव्यक्त होता है उस गुणविशेष को रूप समझा जाता है। इसका अर्थ है विभिन्न प्रकार के रूप या आकार। इसमें रूपों के रहस्य और अंतर हैं। उदाहरण के लिए- अलग-अलग आकृतियों, जैसे-गोल, अंडाकार, कई रंगों वाला, कठोर, मुलायम, खुरदरा, चिकना आदि। यह न केवल रूप (रूप) के ज्ञान पर जोर देता है, बल्कि रूपों के सूक्ष्म और व्यक्तित्व के उभार पर भी ध्यान केंद्रित करता है । किसी भी कलाकृति की रूप-रेखा जितनी सुंदर होगी वह कलाकृति उतनी ही उत्कृष्ट होगी। और ऐसा तभी संभव है जब रूप-भेदों की बारीकियों का सम्यक ज्ञान हो।

प्रमाण :

चित्रकला के षडंग का दूसरा अंग है 'प्रमाण'। प्रमाण में अंगों का उचित अनुपात बताया गया है। यह वस्तुओं की संरचनात्मक शारीरिक रचना में एक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। साधारण अर्थों में प्रमाण, मान, सीमा, कद और लंबाई-चौड़ाई; अर्थात वस्तु की विवरणात्मक स्थिति को समझा जाता है। उचित प्रमाण होने से ही चित्र द्वारा मूल वस्तु की यथार्थता का ज्ञान होता है। चित्र द्वारा यथार्थबोध हो इसके लिए चित्रकार में उचित प्रमाण-शक्ति होना आवश्यक है। उचित प्रमाण के अभाव में चित्र सौंदर्यहीन हो जाता है।

भाव :

चित्र में भाव, आकृति की भंगिमा से व्यक्त होता है। भाव- योजना भावना, एक भावना या एक इरादे के बारे में बताती है। दर्शन और काव्यशास्त्र में भावों की महत्ता पर शूक्ष्मता और व्यापकता से विचार किया गया है। भाव मूलतः अनुभव का विषय होता है। शरीर इंद्रिय और मन के धर्मों में विकार की स्थिति उत्पन्न करना भाव का काम है। निर्विकार चित्त में प्रथमतः किसी भी तरह का विक्षोभ भाव के द्वारा ही उत्तपन्न होता है। भाव का संबंध किसी-न-किसी विभाव से होता है। मन में जिस भाव का रस उत्पन्न होता है शरीर में उसी के अनुकूल लक्षण प्रकट होने लगते हैं। न केवल मनुष्य का शरीर बल्कि संसार का कोई भी कार्य-व्यापार भाव निरपेक्ष नहीं होता है। भिन्न-भिन्न भावों की अभिव्यंजना से कलाकृति में भिन्न-भिन्न विकारों का समावेश होता है। भावभिव्यंजना के दो रूप होते है : प्रत्यक्ष और अप्रत्यच्छ भावनाएँ। प्रत्यक्ष भावरूप को हम आँखों से देख पाते हैं जबकि प्रच्छन्न भावरूप का अनुभव द्वारा समझा जाता है।

लावण्य योजना :

लावण्य बाहरी सौन्दर्य का अभिव्यंजित होता है। रूप की संगति और परिमिति को ही लावण्य कहते हैं। भाव भीतरी सौन्दर्य का बोधक है जबकि लावण्य के द्वारा बाहरी सौन्दर्य अभिव्यक्त होता है। चित्र में बाह्य अलंकृति, छाया और कांति का समावेश लावण्य योजना के द्वार ही संभव है। चित्र की निर्जीव प्रतिकृति लावण्य-योजना के कारण ही सजीव दिखाई पड़ने लगती है। वास्तव में लावण्य भावों का पोषण और संवर्धन कर के उसकी सौंदर्यानुभूति में वृद्धि करता है। खजुराहो और कोणार्क में भारतीय यक्षी की मूर्तियां लावण्या की पहचान हैं।

सादृश्य :

प्रतिकृति का जिस गुण के कारण मूल वस्तु से समानता स्थापित होती है उसे सादृश्य कहा जाता है। इसका कार्य होता है किसी रूप के भाव को दूसरे रूप की सहायता से स्थापित करना। लेकिन किसी मूल वस्तु के बाहरी रंग-रूप की अपेक्षा उसके स्वभाव या धर्म का सादृश्य दिखाना ज्यादा उपयुक्त माना जाता है। कामिनी के मुख और चन्द्र के सादृश्य का यही आधार होता है। चित्र में अगर मूल वस्तु के गुण-दोषों का समावेश नहीं होगा तो वह वास्तविक कृति नहीं होगी। चित्र चाहे वास्तविक हो या कल्पना युक्त प्रेक्षकों को उसे पहचाने में कठिनाई होती है तो वह चित्र अशुद्ध माना जाता है। शुद्ध चित्र ही उत्तम चित्र होता है और चित्र तभी शुद्ध हो सकता है जब उसमे सम्यक सादृश्य की योजना हुई हो।

वर्णिकाभंग :

चित्र में विभिन्न वर्णों के संयोग से जो भंगिमा उत्पन्न की जाती है उसे ही वर्णिकाभंग कहते हैं। असंख्य रंग न केवल उपस्थिति का एक पहलू हैं, बल्कि आंतरिक चरित्र की अभिव्यक्ति हैं। एक बहुमुखी कलाकार के हाथों में भी साधारण रंग असाधारण उत्साह का उच्चारण करते हैं। चित्र में उचित वर्णों की योजना से विश्वसनीयता तो आती ही है साथ-ही-साथ एक दूसरे से उनकी समीपता और दूरी उसमें विशिष्ट प्रभाव भी उत्तपन्न करते हैं। वर्णिकाभंग ही हमें यह बताता है कि चित्र में कहाँ किस वर्ण की योजना की जानी चाहिए; किस वर्ण के समीप कौन सा वर्ण होना चाहिए और कौन सा वर्ण किस वर्ण से दूर होना चाहिए। इसका कारण यह है कि विभिन्न वर्ण हमारे विभिन्न मनःस्थितियों से जुड़े होते हैं। वर्णिकाभंग चित्रकर्म साधना का चरम बिन्दु होता है इसलिए इसे षडगों में अंतिम अंग कहा जाता है। अन्य अंगों की अपेक्षा इसकी साधना समय एवं श्रमसाध्य होती है। इसके लिए लंबे समय तक हाथ में तूलिका लेकर अभ्यास करना होता है। साथ ही वर्णों का ज्ञान भी अपेक्षित होता है। चित्रकला में प्रमुख वर्ण पाँच माने जाते हैं: उजाला, पीला, लाल, काला और नीला । इन्हीं प्रमुख वर्णों के संयोग से सैंकड़ों उपवर्ण बनाए जाते हैं। चित्रों में अति सूक्ष्म कार्य को दिखाना इसी के द्वारा संभव होता है। वर्णिकाभंग में हस्तकौशल की थोड़ी भी विकृति चित्र के सौंदर्य को नष्ट कर सकती है। इसलिए चित्रकला में वर्णिकाभंग की साधना अतिआवश्यक और कठिन मानी जाती है।

निष्कर्ष (Conclusion)

- दृश्य कला तत्वों को विभिन्न क्षेत्रों में व्यावहारिक रूप से लागू किया जाता है। कलाकार, डिज़ाइनर और निर्माता इन तत्वों का उपयोग संदेशों को संप्रेषित करने, भावनाओं को जगाने और अपने काम के सौंदर्य और कार्यात्मक पहलुओं को बढ़ाने के लिए करते हैं।
- कला का एक काम दृश्य अभिव्यक्ति, रंगो को थोपना और खाली स्थानों से अधिक है। यह न केवल रूप है बल्कि निराकार (व्यंजना) है जो एक कलाकृति की आभा को पूरा करता है। और इस तरह प्राचीन भारतीय साहित्यिक ग्रंथों में 'षडंग' भारतीय कला का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है।

ग्रन्थसूची (Bibliography)

- दृष्य कला आणि साहित्य, वसंत आबाजी डहाके, लोकवाड्गमय ग्रिह प्रकाशन, 1 जानेवारी 2022
- भारतकोश
- भाव स्पंदन] लेखक सई अजय देशपांडे] फर्स्ट एडिशन, 23 अक्टूबर 2023